श्रावक चालीसा

पढ़ते जाओ

कमियां दूर करते जाओ

रचना - ८४ लाख मंत्र लेखन कर्ता प.पू. आचार्य श्री १०८ वासुपूज्य सा. म. के शिष्य

आचार्य श्री १०८ श्रेयसागरजी महाराज

सचित्र चौका पुराण
ग्रंथ द्वितीय
प्रकाशन सन्
२०२६
कुल
पद्य रचना
ग्यारह सौ सोला
सोला क्या बोला
पढ़ें - सुनें
जीवन में उतारें

श्रावक चालीसा के
प्रकाशन
कर्ता
समस्त
ज्ञानदान दाता
सचित्र
चौका
पुराण
ग्रंथ परिवार
सदस्य

आचार्य श्री द्वारा रचित ब्रह्मचर्य अवस्था में

पढ़ें
सुनें

समय

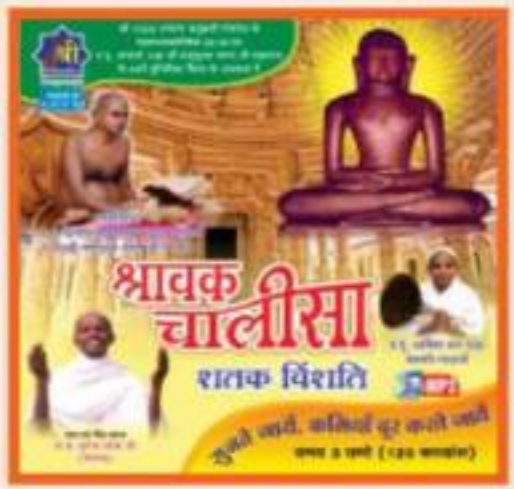

३ घंटे

जीवन
में
उतारें

शतक विंशति ओडियो सी.डी. श्रावक चालीसा

हमारी वेब साइट है
www.vasupujyasagarji.com
internet पर देखें youtube click करें

प्रथम
संस्करण

10000
प्रतियां

A

आशीर्वाद

गुरुवर समाधि सम्राट

८४ लाख मंत्र लेखन कर्ता
कोटी मंत्र जप तपस्वी
आचार्य १०८ श्री श्री श्री
वासुपूज्यसागरजी महाराज

टाइपिंग व कम्पोजिंग
संघस्थ – बा. ब्र. नेहल दीदी

शिष्य

आचार्य १०८ श्री श्री
श्रेयसागरजी महाराज

ससंघ

क्षु. १०५ श्री
समर्पणसागरजी

मुनि १०८ श्री
सुदर्शनसागरजी
महाराज

गणिनी आर्यिका
१०५ श्री श्रेयमति
माताजी

आर्यिका १०५
श्री श्रेष्ठमति
माताजी

क्षुल्लिका १०५
श्री सरलमति
माताजी

बा. ब्र. नेहल
(भाग्या) दीदी

बा. ब्र. हरिप्रिया
दीदी

बा. ब्र. हीना
दीदी

ममता दीदी

बा. ब्र. श्रीधर भैया

दीक्षा १६/८/२०१८ श्रावण शुक्ला षष्टि
गोमटेश्वर बाहुबली (श्रवणबेलगोला)

आचार्य श्री वासुपूज्यसागरजी

बा.ब्र. सुगन्धभैयाजी को अपने हाथों से दीक्षासंस्कार करते हुए

गुरु समाधि १७/८/२०१८ श्रावण शुक्ला सप्तमी
(मोक्ष सप्तमी) गोमटेश्वर बाहुबली

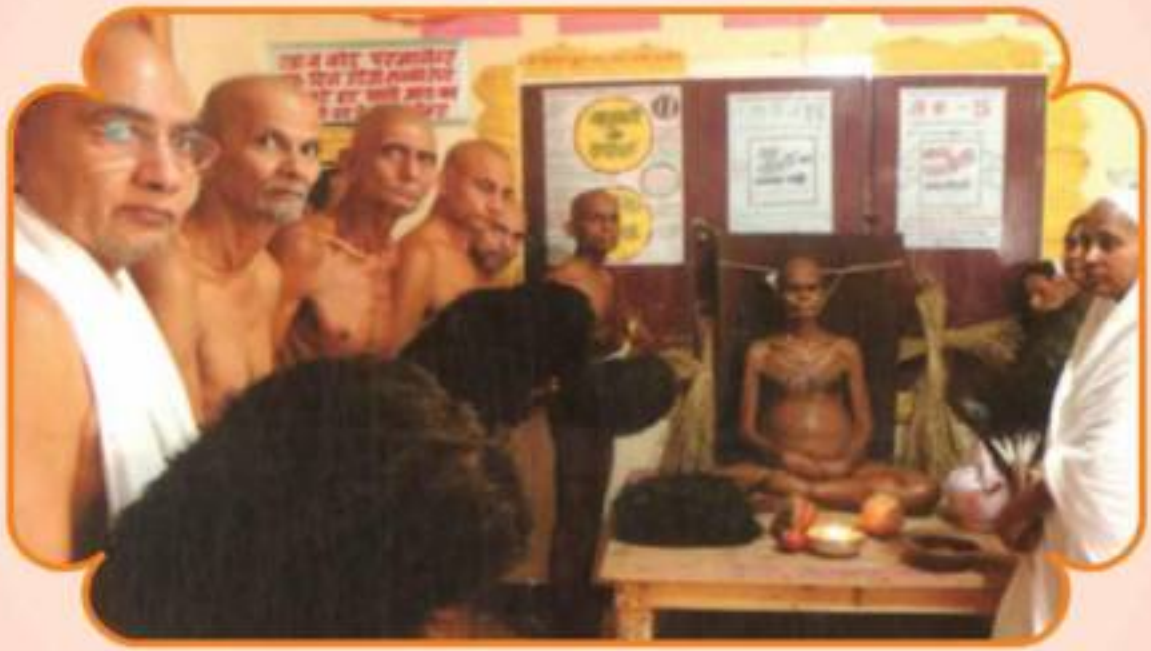

शिष्य को दीक्षा देने के एक दिन पश्चात् गुरु समाधि
श्री वासुपूज्यसागरजी महाराज की समाधि का दृश्य

आचार्य पदारोहण २७/८/२०१८ भाद्र कृष्ण एकम

१२५ पिच्छीधारियों के सान्निध्य में, आचार्य श्री १०८ सुविधिसागर महाराजजी
आचार्य पद के संस्कार करते हुए
विशेष सान्निध्य पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज (F)

गुरुवर आचार्य श्री वासुपूज्यसागरजी द्वारा रचित ग्रंथ

गूढ़ रहस्य चिन्तामणी

आन्तरिक पीड़ा दिग्दर्शन

छहढ़ाला सुरक्षाचक्र

ज्ञानवर्धिनी प्रश्नोत्तरी टीका

पार्श्वरत्न प्रश्नोत्तरी टीका

रयणसार

ब्रह्मचर्य एवं ८४ लाख उत्तरगुण मंत्र विधान

ब्रह्मचर्य एवं
८४ लाख उत्तरगुण
मंत्र विधान

समयसार
रहस्य प्रश्नोत्तरी
टीका

चतुर्विंशति तीर्थंकर
निर्वाण भक्ति
{ गणिनी आर्यिका
श्री श्रेयमति माताजी}

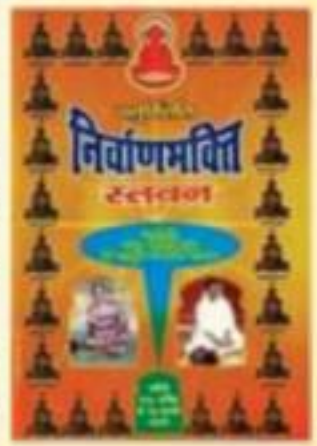

आचार्य श्री श्रेयसागरजी द्वारा उनके बाल ब्रह्मचारी सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में लिखित पुस्तके

भक्ति संगीत
की लहरे
प्रकाशन
सन् २००२
कलकत्ता (प.बंगाल.)

भक्ति संगीत
वर्तमान के गीत
प्रकाशन
सन् २००५
टिकैतनगर (उ.प्र.)

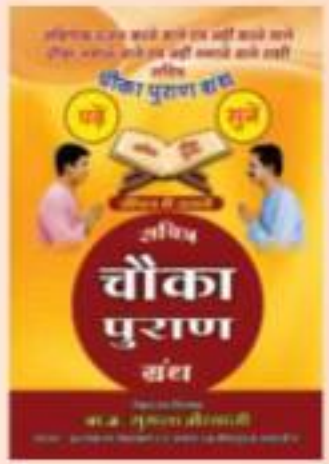

सचित्र
चौका पुराण ग्रंथ
प्रकाशन
सन् २०१५
पन्ना (म.प्र.)

आचार्य श्री श्रेयसागरजी द्वारा रचित पुस्तके

श्री मांगीतुंगी विधान
सन् २०२०

चौका चालीसा

श्री अन्जनगिरी तीर्थ विधान
सन् २०२१

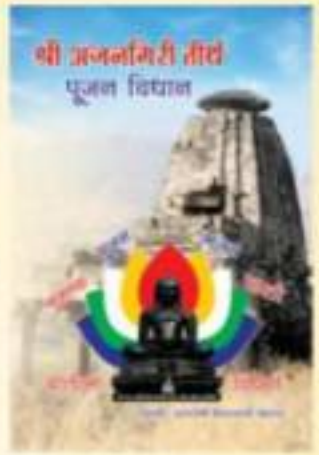

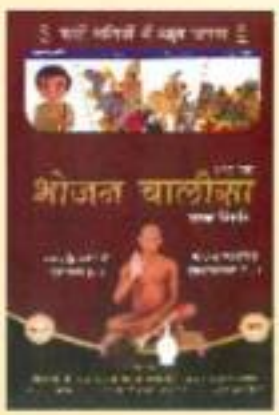

भोजन चालीसा
सन् २०२१

पुण्योदय क्षेत्र शिरसाड़ (विरार) बम्बई, पूजन चालीसा
सन् २०२२

J

ग्रंथ प्रकाशन
२०२६

पुण्यार्जक
समस्त सचित्र चौका पुराण ग्रंथ
परिवार सदस्य

आचार्य श्री द्वारा लिखित
आगामी रचनाएं

१ चिन्तन चालीसा
२ जैन भारत चालीसा
३ एक भजन बड़ा वजन
(वागड़ छप्पन मेवाड़ गाथा)
४ उत्तम क्या है?

www.vasupujyasagarji.com
INTERNET पर उपलब्ध
आचार्य श्री पार्श्वसागर जी महाराज

- महाराज श्री का जीवन परिचय
- गुरु परिचय • संघ परिचय
- प्रमुख ग्रन्थ एवं रचनाएँ
- चातुर्मास दिग्दर्शन
- भजन, प्रवचन एवं साहित्य

समाधि सम्राट आचार्य श्री १०८ पार्श्वसागर जी महाराज (कोटला वाले)

Site sponsored by - Bhavishya Jain
JAIN ENTERPRISES, Muzaffarnagar
nehaldidi2009@gmail.com • bkjainid@yahoo.com

आचार्य श्रेयसागरजी महाराज द्वारा उनकी
बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में रचित व गाये गये भजनों
की वीडियो एवं ओडियो सी.डी. क्रमांक १ से १५
तक के नाम समस्त भजन **www.vasupujyasagarji.com**
Internet पर देखें **Youtube click** करें

सी.डी. क्रमांक
1 2 3

सी.डी. क्रमांक
4 5 6

L

सी.डी. क्रमांक

7 8 9

सी.डी. क्रमांक

10 11 12

सी.डी. क्रमांक

13 14 15

M

समाधिस्थ कोटीमंत्र जप तपस्वी आचार्य श्री १०८ वासुपूज्यसागरजी महाराज का जीवन परिचय

जन्म नाम, जाति एवं स्थान	–	दयाचंदजी जैन, गोलालारे, महेवा जि. पन्ना (मध्य प्रदेश)
माता का नाम	–	स्व. श्रीमती रामादेवी जैन (आ. श्रेणीमति माताजी प्रथम)
पिता का नाम	–	स्व. श्री कालीचरणजी जैन
भाई बहन	–	तीन भाई (सभी ने दीक्षा लेकर समाधिमरण किया), तीन बहनें
जन्म तारीख	–	१३.११.१९५४, मगशिर कृष्णा ३ विक्रम संवत २०११
लौकिक शिक्षा एवं गृहत्याग	–	११वीं सायंस बायोलोजी, १८ वर्ष की उम्र में १९७३
मुनिदीक्षा	–	१.१२.१९७६ बुधवार, मगशिर शुक्ला दशमी विक्रम संवत २०३३
मुनिदीक्षा का नाम	–	श्री १०८ वासुपूज्यसागरजी महाराज
दीक्षा गुरु	–	परम पूज्य आ. १०८ श्री पार्श्वसागरजी महाराज (कोटलावाले)
मुनिदीक्षा स्थान	–	सागवाड़ा राजस्थान (डूंगरपुर)
आचार्यपद	–	१९.४.१९८८ मंगलवार, वैसाख सुदी तीज (अक्षय तृतीया) विक्रम संवत २०४५
आचार्यपद स्थान	–	वसगड़े जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
आचार्यपद प्रदाता	–	आचार्य श्री पार्श्वसागरजी (कोटला वाले)
समाधितिथि	–	१७.८.२०१८ तिथी श्रावण शुक्ला ७ मुकुटसमी शनिवार वि.सं. २०७५ प्रातः २.५०
समाधिस्थान	–	श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)
अग्निसंस्कार	–	१८८.२०१८ तिथी श्रावण शुक्ला अष्टमी प्रातः ८.४५ रविवार वि.सं. २०७५ (N)

प.पू. १०८ आचार्य श्री श्रेयसागर महाराजजी का जीवन परिचय

जन्म नाम	—	सुगंधकुमार जैन
जन्म स्थान	—	पाड़वा (जि. डूंगरपुर, राजस्थान)
जन्म तारीख	—	३०–१२–१९७३
माता का नाम	—	श्रीमती केशरबाई जैन
पिता का नाम	—	श्री हीरालालजी जैन (मुनि विश्वाससागरजी) समाधि बोरिवली त्रिमूर्ति बम्बई
शिक्षा	—	१०वीं (रुचि – चिंतन, मनन एवं लेखन)
भाई बहन	—	३ भाई, ३ बहनें (तीसरी बहन वर्तमान में गणिनी आर्यिका श्रेयमति माताजी)
ब्रह्मचर्य	—	अश्विन शुक्ला १४ सम्मेद शिखरजी २५–१०–१९९७
सातवीं प्रतिमा	—	७–८–१९९८ रक्षाबंधन भागलपुर (बिहार)
गुरू	—	परम पूज्य आ. १०८ श्री वासुपूज्यसागरजी महाराज
दीक्षा	—	गुरूवार, १६.८.२०१८ श्रावन शु.६ प्रातः ११.३० श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)
दीक्षागुरु	—	परम पूज्य आ. १०८ श्री वासुपूज्यसागरजी महाराज
दीक्षानाम	—	मुनि श्री १०८ श्रेयसागर महाराज
आचार्यपद	—	२७–८–२०१८ भाद्रपद कृष्ण एकम श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)
आचार्य पद संस्कार	—	आचार्य श्री सुविधिसागरजी महाराज
सान्निध्य	—	आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ एवं अन्य १२५ साधुवृंद, स्वस्ति श्री भट्टारक चारूकीर्ति महास्वामीजी

श्री भगवान बाहुबली
पूजन–भजन आरती
प्रकाशन
महामस्तकाभिषेक
२०१८
(ब्रह्मचर्य अवस्था में)

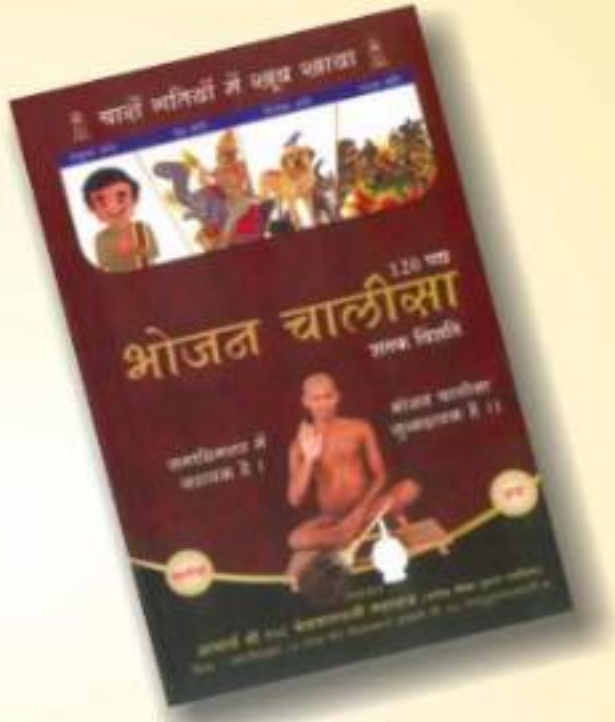

समाधि मरण में सहायक है भोजन चालीसा सुख दायक है

रचना-
आचार्य श्रेयसागर महाराज

(P)

❖ शान्तिधारा ❖

जय ॐ नमः सिद्धेभ्यः[३] श्री वीतरागाय नमः ॐ नमोऽर्हते, भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगण परिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय अनन्त संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डल मण्डिताय, ऋषि आर्यिका, श्रावक श्राविका प्रमुख चतुःसंघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं अस्माकं छिंधि[२] भिंधि[२], मृत्युं छिंधि[२] भिंधि[२],। अतिकामं छिंधि[२] भिंधि[२], रतिकामं छिंधि[२] भिंधि[२], क्रोधं छिंधि[२] भिंधि[२], अग्नि भयं छिंधि[२] भिंधि[२], सर्व शत्रु भयं छिंधि[२] भिंधि[२], सर्वोपसर्गं छिंधि[२] भिंधि[२], सर्व विघ्नं छिंधि[२] भिंधि[२], सर्व भयं छिंधि[२] भिंधि[२], सर्व राज भयं छिंधि[२] भिंधि[२], सर्व चोर भयं छिंधि[२] भिंधि[२], सर्व दुष्ट भयं छिंधि[२],

सर्व मृग भयं छिंधि² भिंधि², सर्वात्मचक्र भयं छिंधि² भिंधि², सर्व पर मंत्रं छिंधि² भिंधि², सर्व शूल रोगं छिंधि² भिंधि², सर्व क्षय रोगं छिंधि² भिंधि², सर्व कुष्ट रोगं छिंधि² भिंधि², सर्व क्रूर रोगं छिंधि² भिंधि², सर्व नर मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व गज मारीं छिंधि² भिंधि², सर्वाश्व मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व गोमारीं छिंधि² भिंधि², सर्व महिष मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व धान्य मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व वृक्ष मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व गुल्म मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व पत्रमारीं छिंधि² भिंधि², सर्व पुष्प मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व फल मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व राष्ट्र मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व देश मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व विष मारीं छिंधि² भिंधि², सर्व वेताल शाकिनी भयं छिंधि² भिंधि², सर्व वेदनीयं छिंधि² भिंधि², सर्व मोहनीयं छिंधि² भिंधि², सर्व कर्माष्टकं छिंधि² भिंधि² ।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शान्तिं कुरु कुरु, सर्व जनानन्दनं कुरु², सर्व भव्यानन्दनं कुरु², सर्व गोकुलानन्दनं

कुरु², सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंबपत्तन द्रोणमुख । संवाहानंदनं कुरु², सर्व लोकानन्दनं कुरु², सर्व देशानन्दनं कुरु², सर्व यजमानानंदनं कुरु², सर्व दुःखं हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं कुरु कुरु ।

यत्सुखंत्रिशु लोकेशु व्याधिव्यसनवर्जितं ।
अभयं क्षेमारोग्यं स्वस्ति रस्तु विधीयते शान्तिरस्तु शिवमस्तु ।
कुल गोत्र धन धान्यं सदास्तु ।
चन्द्रप्रभ, वासुपूज्य, मल्लि, वर्धमान, पुष्पदंत, शीतल,
मुनिसुव्रत, नमिनाथ नेमिनाथ पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः ।
इत्येन मन्त्रेण नवग्रह शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम् ।
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपो धनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवान जिनेन्द्रः ।।
इति शांतिधारा

❂ मुखड़ा ❂

कलीकाल में भक्त अच्छे काम करके नाम गुरु का लेता हैं
और भक्त बुरे काम खोटे काम करके भी नाम गुरु का लेता हैं

मेरे आपकी कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।
नादानी करके हम तो,[२] तेरा नाम ले रहे हैं ।।

भाग　　कहते गुरु कृपा से
सब काम हो रहे हैं　　१

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

होटल में जाके भोजन, पानी भी पी रहे हैं –२।
ठेले के चाट भुजिये, खाकरके जी रहे हैं –२।।
• दिल में ना धर्म मेरे,[२] रातों में खा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।9।।**

आलू भी खा रहे हैं, मूली भी खा रहे हैं –२।
गाजर का हलवा खाकर, जिनवाणी गा रहे हैं –२।।
• अदरक की चाय पीकर,[२] आनंद पा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।२।।**

मंदिर में बैठे जपिया, मालायें जप रहे हैं –२।
दुकान में है मन और, कपड़ें भी नप रहे हैं –२।।
• हाथों में ले मोबाईल,[२] गपचप भी कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३।।

माँ बहनें पूजा करके, आनन्द पा रही हैं –२।
पूजा के साथ घर की, बातें भी गा रही हैं –२।।
• घर की मुसीबतें हम,[२] मंदिर में गा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

चमड़े के देखो जूते, हम घर में ला रहे हैं –२।
मुर्दों को तन पे धारे, सजधज के आ रहे हैं –२।।
• घर को न घर बनाया,[२] मरघट बना रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५।।

बुढ़ापे में जवानी, तन अपने ला रहे हैं –२।
केशों की ये सफेदी, काली करा रहे हैं –२।।
• सोई हुई जवानी,[२] हरपल जगा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६।।

अहिंसा के पुजारी, नारे लगा रहे हैं –२।
छाने बिना ही पानी, बोटल का पी रहें हैं –२।।
• कथनी से भिन्न करनी,[२] करते ही जा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।७।।

व्यापार में अनीति, करते ही जा रहे हैं –२।
पापों का पैसा घर में, भरते ही जा रहे हैं –२ ।।
• भरकर तिजोरी घर की,[२] मरते ही जा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८।।

शादी की हो या कोई, दावत में जा रहे हैं –२।
जूते ये पहने पहने, मस्ति से खा रहे हैं –२।।
• चलते ही फिरते हम तो,[२] जूठा ही खा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६।।

माँ बाप के लिए हम, नौकर लगा रहे हैं –२।
बेटा करे ना सेवा, हम गीत गा रहे हैं –२।।
• जैसा किया था हमने,[२] वैसा ही पा रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।१०।।**

☺☺☺ **पहला भाग समाप्त** ☺☺☺

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

मंदिर का जो है पैसा, घरकाम ले रहे हैं –२।
उसमें ही कुछ बचाके, हम दान दे रहे हैं –२।।
• मंदिर के काम करके,[२] घर अपने चल रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग मेरे आपकी कृपा ..... ।।१९।। २

विधान चल रहा है, बोली भी ले रहे हैं –२।
मंदिर का जो ये पैसा, सालों में दे रहे हैं –२।।
• बोली का पैसा ना दे,[२] बस ब्याज दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।१२।।**

भोजन बनाना बेटी, को ना सिखा रहे हैं –२।
फैशन में एक नम्बर, आगे बढ़ा रहे हैं –२।।
• भोजन बनाने घर में,[२] नौकर लगा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।१३।।**

जीवों पे दया करने, की बात कर रहे हैं –२।
मंदिर में नाहने को, गीजर भी धर रहे हैं –२।।
• तन सुख का पाने हम,[२] ये पाप कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।१४।।**

मंदिर में हम प्रभु के, गीतों को गा रहे हैं –२।
घर इनके जा के देखो, पिज्जा चबा रहे हैं –२।।
• घरवाली के लिए क्रिम,[२] शेम्पू भी ला रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।१५।।**

बेटे का हो जनम तो, खुशियां मना रहे हैं –२।
बेटी का नाम सुनते, आँसू बहा रहे हैं –२।।
• बेटी को धन पराया,[२] हम मानते रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।१६।।**

मुनिवर के चौमासे को, व्यापार बना रहे हैं –२।
कितना हुआ मुनाफा, ये जोड़ कर रहे हैं –२।।
• गुरुवर का दिया हम तो,[२] गुरु पे लगा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।१७।।**

मंदिर को समय ना, पिक्चर को जा रहे हैं –२।
तीरथ के बहाने, पिकनीक मना रहे हैं –२।।
• तीरथ में शादी के हम,[२] जोड़े जमा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१८।।

लगाके नेलपॉलीश, चौके में जा रहे हैं –२।
हाथों से दे के आहार, खुशियां मना रहे हैं –२।।
• हाथों की नेलपॉलिश,[२] भोजन में दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१६।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

गुरुवर के चौके हम तो, घर में लगा रहे हैं –२।
आलू मूली के बर्तन, चौके में ला रहे हैं –२।।
• अशुद्धि में भी हो के,[२] उसमें ही खा रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते हैं गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।२०।।**

ॐॐॐ दूसरा भाग समाप्त ॐॐॐ

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

बुढ़ापे में जवानी, देखो जगा रहे हैं –२।
जीवों की पीड़ा होठों, पे हम लगा रहे हैं –२।।
• होठों की लाली खाकर,[२] क्षुधा भगा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग ३ मेरे आपकी कृपा ..... ।।२१।।

रविवार को नमक का, हम त्याग कर रहे हैं –२।
काजु की बरफी हलुआ, मस्ति से धर रहे हैं –२।।
• थोड़ा सा त्याग करके,[२] ज्यादा ही भर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।२२।।**

धोती दुपट्टा पहनें, न्हवन को चल रहे हैं –२।
मंदिर के जूते देखों, पैरों में ड़ल रहे हैं – २।।
• हम पुण्य करने चलते,[२] पापों में ढ़ल रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।२३।।**

पाजामा पेन्ट कुर्ता, दुपट्टा उस पे डाले –२।
जन्माभिषेक प्रभु के, न्हवन को हम तो चाले –२।।
• शुद्धि ये जिनधरम की,[२] दिन रात धो रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।२४।।

हम भक्त जिन गुरु के, उनसे ही जुड़ रहे हैं –२।
गुरुवर को बांट करके, धरम से मुड़ रहे हैं –२।।
• भक्ति में स्वार्थ भरके,[२] हम पाप कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।२५।।

मुनिवर के पास दौड़ा, मुनिवर से नाता जोड़ा –२।
नहीं काम हुआ अपना, उनसे ही नाता तोड़ा –२।।
• हम स्वार्थ भावना ले,[२] गुरुवर से जुड़ रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।२६।।

चौके लगाते घर में, सबको बुला रहे हैं –२।
कैसे हो वस्त्र शुद्धि, ये सब भुला रहे हैं –२।।
• अशुद्धि से निकाला,[२] मुखड़ा फूला रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।२७।।

मुनिवर के आगमन पर, चौके भी लग रहे हैं –२।
दो चार दिन ही बीते, कैसे ये थक रहे हैं –२।।
• चौके के नाम पर ये,[२] पकवान सज रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।२८।।

रातों की छोड़ी शादी, वो दिन में कर रहे हैं –२।
शादी की देखों दावत, रातों में धर रहे हैं –२।।
• डी जे पे नाच नचके,[२] बोतल भी भर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।२६।।

आहार दे के लेना, छहढ़ाला पढ़ रहे हैं –२ ।
आहार ले के आहार, देने को बढ़ रहे हैं –२ ।।
• मुनिवर से माया करके,[२] हम पाप कर रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।३०।।**

☞☞☞ **तीसरा भाग समाप्त** ☜☜☜

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

नम्बर से ही पिता को, भोजन करा रहे हैं –२।
दुनिया के डर से माँ को, पानी पिला रहे हैं –२।।
• माँ बाप की सेवा में,[२] हम जी चुरा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।

भाग ४ मेरे आपकी कृपा ..... ।।३१।।

धनवान का नियम से, सम्मान कर रहे हैं –२।
धनहीन का नियम से, अपमान कर रहे हैं –२।।
• इन्सानियत को छोड़े,[२] शैतान हो रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३२।।

मंदिर में पंथों के ही, कारण से लड़ रहे हैं –२।
अपने ही अपने मत में, मंदिर में अड़ रहे हैं –२।।
• धरम को बाँटने हम,[२] हरपल में बढ़ रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३३।

जाओ ना दर मुनि के, अज्ञानी कह रहे हैं –२।
कपड़े वाले गुरु की, बातों में बह रहे हैं –२।।
• लकड़ी की छोड़ नैय्या,[२] पत्थर की ले रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३४।।

बेटी है तो ये अपनी, रख प्रेम से रहे हैं –२।
बहुएं नहीं हैं अपनी, ये बात कह रहे हैं –२।।
• अपना पराया करके,[२] ताना भी दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।३५।।**

बेटा बड़ा हुआ है, चिन्ता सता रही है –२।
छोटे कुलों की बहुएं, घर अपने आ रही हैं –२।।
• पवित्र जिन धरम की,[२] खिचड़ी बना रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३६।।

होते ना देवी देवा, अज्ञानी पढ़ रहे हैं –२।
चादर चढ़ा के झुकते, मिथ्या में बढ़ रहे हैं –२।।
• बाहर ना पाप दिखे,[२] मंदिर में अड़ रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३७।।

मंदिर में फूल चढ़ते, झगड़े भी हो रहे है –२।
फूलों की लाखों माला, शादी में ला रहे हैं –२।।
• न पाप घर का दिखता,[२] भक्ति में रो रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३८।।

पूजन में दीप जलते, हमें पाप दिख रहे हैं –२।
दीपक से हिंसा होती, ऐसा ही लिख रहे हैं –२।।
• घर अपने गैस भट्टे,[२] जलते ना दिख रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।३६।।

आगम की वाणी खूंटी, पे टांग हम रहे हैं –२।
मनमानी करके हम तो, पृथ्वी में जम रहे हैं –२।।
• कलिकाल में ही ऐसे[२], ये जीव आ रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।४०।।**

चौथा भाग समाप्त

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

मंदिर में जाके हम तो, पूजन भी कर रहे हैं –२।
जिनवाणी को उठा के, पैरों पे धर रहे हैं –२।।
• जिनवाणी चौकी पर हम,[२] छोड़े ही जा रहे है •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग मेरे आपकी कृपा ..... ।।४१।। ५

जिनवाणी पैरौं पे रख, कुन्दकुन्द लिख रहे हैं –२।
किताबों में ये झूठे, फोटो भी दे रहे हैं –२।।
• स्वयं की बुद्धि छोड़ी,[२] भाड़े की ले रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४२।।

कहते हैं वस्त्रधारी, की पूजा ना हम करते –२।
लघु पंचकल्याणक में, पूजा जनम की करते –२।।
• स्वयं की बोली पर ही,[२] खुद घात कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४३।।

आर्यिका माताओं के, हम अर्घ ना चढ़ाते–२।
मुनि के समान है ना, ये भाव मन में लाते –२।।
• आगम में अपने घर के,[२] कानून ला रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४४।।

आर्यिकाओं की नवधा, भक्ति ना कर रहे हैं –२।
सुपात्र की पूजा में, हमें दोष दिख रहे हैं –२।।
• आगम को छोड़ के हम,[२] मनमानी कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।४५।।**

सासु बहु के झगड़े, घर घर में हो रहे हैं –२।
ना मर्द घर के वीरा, कैसे ये रो रहे हैं –२।।
• इन बिल्लियों के मारे,[२] चूहे हम बन रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४६।।

बच्चों को देखो हम तो, शिक्षा दिला रहे हैं –२।
लौकिक शिक्षा से हम, आगे बढ़ा रहे हैं –२।।
• शिक्षा ना धर्म की हम,[२] इनको पढ़ा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४७।।

डी जे लगाके देखो, शादी में नच रहे हैं –२।
मंदिर में भक्ति करने, कैसे ये बच रहे हैं –२।।
• कलिकाल की ये माया,[२] माया में जच रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४८।।

बनती धरमशालाएं, दे धरम पे रहे हैं –२।
त्यागी व्रती से भी हम, पैसे ले रहे हैं –२ ।।
• पैसे के आगे त्यागी,[२] हमको ना दिख रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।४६।।

धोती दुपट्टा पहनें, गाड़ी से आ रहे हैं –२।
चौके का पानी भर कर, गाड़ी में ला रहे हैं –२।।
• अशुद्धि से बनाकर,[२] आहार ला रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते हैं गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।५०।।

❀❀❀ **पांचवां भाग समाप्त** ❀❀❀

पैसों के आगे देखो, धरम भी बिक रहे हैं –२।
धरमशाला में धन्धे, आदि भी चल रहे हैं –२।।
• उनमें किराये हमको,[२] ज्यादा ही मिल रहे •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग ६ मेरे आपकी कृपा ..... ।।५१।।

शादी में धर्मशाला, महिनों से दे रहे हैं –२।
कहते हैं महिनों से, बुकिंग ले रहे हैं –२।।
• खाली पड़ी हो तब ही,[२] सन्तों को दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५२।।

गाड़ी में बैठ आये, आहार दे रहे हैं –२।
चौके के कपड़े पहने, मोबाईल ले रहे हैं –२।।
• मन वचन काय की शुद्धि,[२] झूठी ही दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५३।।

सोले के वस्त्र पहने, लघुशंका जा रहे हैं –२।
अशुद्धि है ये करके, घड़ा पाप भर रहे हैं –२।।
• पानी के छींटों से हम,[२] शुद्धि भी कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५४।।

मुनियों को देख करके, अज्ञानी हस रहे हैं –२।
भारत के कोने कोने, में ये तो बस रहे हैं –२।।
• राहें ये सच्ची छोड़े, नरकों में धस रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५५।।

कपड़ें ही पहने हम तो, मुक्ति में जा रहे हैं –२।
भावों से मुक्ति मिलती, ये मन में भा रहे हैं –२।।
• जपतप तो जड़ क्रिया है,[२] ये भाव ला रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५६।।

मुनियों के दर्शनों से, हमें पाप लग रहे हैं –२।
कपड़े वाले गुरु के, हम जाप जप रहे हैं –२।।
• मिलों की दूरी को हम,[२] इंची में नप रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५७।।

गादी पे ऊंचे बैठे, प्रवचन भी कर रहे हैं –२।
पीने में बिस्लरी की, बोतल भी ले रहे हैं –२।।
• शिक्षा ना खुद समझते,[२] दूजे को दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५८।।

जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा, मंदिर में कर रहे हैं –२।
मुनिराज के बिना हम, मुनि बनके कर रहे हैं –२।।
• मुनिराज के बिना ही,[२] सुरिमंत्र दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।५६।।

मुनिराज की परीक्षा, लेने को आ रहे हैं –२।
दर्शन के भाव ये ना, मन में ला रहे हैं –२।।
• दर्शन बना प्रदर्शन,[२] अभिशाप पा रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।६०।।**

☞☞☞ **छट्ठा भाग समाप्त** 👌👌👌

साधुओं की संहिता, श्रावक बना रहे हैं –२।
एनीवर्सरी होटल में, जाकर मना रहे हैं –२।।
• दिखे ना पाप अपने,[२] साधु के दिख रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग ७ मेरे आपकी कृपा ..... ।।६१।।

विधवा विवाह करना, आगम में ना कहे हैं –२।
कलिकाल के ये मानव, विधवायें ला रहे हैं –२।।
• वेश्या करम का हरपल,[२] हम बंध कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६२।।

न्हवन करें माँ बहनें, हमें दोष दिख रहे हैं –२।
गर्भालयों में नारी, निषेध लिख रहे हैं –२।।
• परम्परा के आगे,[२] आगम भी बिक रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६३।।

प्रभुवर के तन पे कपड़ा, हाथों से रख रहे हैं –२।
भर भर के कलशा प्रभु पे, न्हवन भी कर रहे हैं –२।।
• बिन ज्ञान के क्रिया ये,[२] मंदिर में कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६४।।

मंदिर में हो प्रवचन, हम दिल चुरा रहे हैं –२।
हो फैसला किसीका, भिड़ हम लगा रहे हैं –२।।
• खोटी ये भावनायें,[२] हर पल बढ़ा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६५।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

हो खर्च पैसे तन पे, हमको न दिख रहे हैं –२।
धरम में दिया पैसा, गिन गिन के लिख रहे हैं –२।।
• फिजुल के कामों में,[२] धन हम लूटा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।६६।।**

वैराग्य हो किसी का, उसको घटा रहे हैं –२।
हम मोक्ष की राहों से, उसको हटा रहे हैं –२।।
• अपने ही जैसा बनने,[२] उसको पटा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६७।।

जिनवाणी को समय ना, जनवाणी पढ़ रहे हैं –२।
धरम को छोड़ के हम, कर्मों में बढ़ रहे हैं –२।।
• नरकों में जाने की हम,[२] सीढ़ी ये गढ़ रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६८।।

प्रवचन छने पानी का, सुनते ही जा रहे हैं –२।
पानी छाने बिना हम, पीते ही जा रहे हैं –२।।
• कथनी से भिन्न करनी,[२] करते ही जा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६९।।

अच्छे से अच्छे चावल, हम घर में ला रहे हैं –२।
पूजन के लिए हम तो, सस्ते ही ला रहे हैं –२।।
• माली ही तो ले जाये,[२] ये भाव ला रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते हैं गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।७०।।

सातवाँ भाग समाप्त

सालों पुराना अचार, मुरब्बा खा रहे हैं –२।
जीवों का ये कलेवर, उदर में ढा रहे हैं –२।।
• अहिंसा परमो धरम,[२] की जय लगा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग ८ मेरे आपकी कृपा ..... ।।७१।।

भाई को भाई हम ना, आज कह रहे हैं –२।
भाई से नाता तोड़े, खुशियों में रह रहे हैं –२।।
• सबसे बड़ा बैरी हम,[२] भाई को कह रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।७२।।

अपने ही अपनों से हम, क्षमा भाव कर रहे हैं –२।
शत्रु से हम क्षमा के, ना भाव धर रहे हैं –२।।
• करके दिखावा हम तो,[२] जहर ही भर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।७३।।**

दो चार पढ़ के पोथी, पंड़ित भी बन रहे हैं –२।
मंदिर में बैठे निंदा, मुनिवर की कर रहे हैं –२।।
• अस्पतालों में जाके,[२] वो ही तो मर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।७४।।

मूलगुण गिनते मुनि के, अपने ना गिन रहे हैं –२।
क्रियाओं को ये छोड़े, निज में ये लीन रहे हैं –२।।
• नरकों में जाने को अब,[२] थोड़े ही दिन रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।७५।।

शादी के ये हैं मण्डप, फूलों से सज रहे हैं –२।
मंदिर में फूल चढ़े तो, डण्डे भी बज रहे हैं –२।।
• मंदिर में पाप दिखते,[२] घर में ना दिख रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।७६।।**

दहेज के दिवाने, दहेज ले रहे हैं –२।
बहु को ये तो कैसे, दुःख दर्द दे रहे हैं –२।।
• अन्याय की रकम से,[२] ये मौज ले रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।७७।।**

चौके में सोले धारी, बन भोज कर रहे हैं –२।
बाहर जाके होटल, में मौज कर रहे हैं –२।।
• ऐसी ही मायाचारी,[२] हम रोज कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।७८।।

बदला जमाना कितना, हम भक्त कह रहे हैं –२।
कमियां छुपाके अपनी, मस्ति में रह रहे हैं –२।।
• चारों गति भ्रमण को,[२] हम स्वर्ग कह रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।७६।।

बच्चों के लिए हम तो, कपड़ें भी ला रहे हैं –२।
तन भी ना पूरा ढ़कता, सबको दिखा रहे हैं –२।।
• बच्चें हमारे बिगड़ें,[२] हम ही सिखा रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।८०।।

❋❋❋ आठवाँ भाग समाप्त ❋❋❋

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

शान्तिधारा प्रभु पे, करने से ड़र रहे हैं –२।
कोई यंत्र पे करें कोई, थाली में कर रहे हैं –२।।
• जिसने बताया वैसा,[२] बिन ज्ञान कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग ६ मेरे आपकी कृपा ..... ।।८१।।

साधु को धन दे श्रावक, अपना ही नाम करते –२।
बाहर सभी से कहकर, बदनाम मुनि को करते –२।।
• अपने ही जिन धरम का,[२] अपमान कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८२।।

सम्मान हो जहां पे, पैसों के खोल बोले –२।
सम्मान ना तो कहते, पैसे ना पास मेरे –२।।
• ख्याति पूजा में हम तो,[२] दिनरात बढ़ रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८३।।

टोटी पे थेली बांधे, हम पानी भर रहे हैं –२।
जीवानी किये बिना, सब जीव मर रहे हैं –२।।
• जिंदा जीवों को हम तो,[२] फांसी पे धर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८४।।

गादी पे ऊँचे बैठे, भाषण भी दे रहे हैं –२।
रातों में काजू पिस्ता, केले भी ले रहे हैं –२।।
• पत्नी को क्रिम लिपस्टिक,[२] लाकर भी दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८५।।

टोटी पे कपड़ा बांधे, पानी भी पी रहे हैं –२।
पानी छना समझके, सबको पिला रहे हैं –२।।
• आजूबाजू से गिरता,[२] बिन छाना पी रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८६।।

चक्की में देखो बालू, पिसती कभी नहीं है –२।
अभिषेक से मूरतियाँ, घिसती कभी नहीं हैं –२।।
• घिसने के डर से हम तो,[२] न्हवन ना कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८७।।

एकाशना व्रतों में, करते ही जा रहे हैं –२।
संध्या में दूध मेवा, फलों को खा रहे हैं –२।।
• दो रोटी छोड़ माया,[२] करते ही जा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८८।।

बिस्तर में चाय देवी, को याद कर रहे हैं –२।
मंदिर गये बिना ही, उदर में भर रहे हैं –२।।
• श्रावक के नाम को हम,[२] बदनाम कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।८६।।

दोषी ना है जमाना, हम दोष दे रहे हैं –२ ।
सूरज ना बदले तारें, हम देख ये रहे हैं –२ ।।
• छठवें ही काल को हम,[२] जल्दी से ला रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।६०।।

➲➲➲ नौवाँ भाग समाप्त ➲➲➲

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

हिंसा के डर से हम, ना धूप खे रहे हैं –२।
पूजा के मंत्रों में ही, संकल्प ले रहे हैं –२।।
• संकल्पी हिंसा से हम,[२] नित पाप कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग १० मेरे आपकी कृपा ..... ।।६१।।

स्वामी जिसे कहे हम, नमन भी कर रहे हैं –२।
पैरों पे हाथ रखकर, जिनवाणी पढ़ रहे हैं –२।।
• ऐसे समाज के ही,[२] ये भक्त बन रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६२।।

समय के पहले हम तो, गाड़ी पे जा रहे हैं –२।
गुरुवर की वाणी सुनने, देरी से आ रहे हैं –२।।
• परम्परा बनी है,[२] उसको निभा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६३।।

हम दान दे के जग में, ढिढ़ोरा पिटते हैं –२।
वर्षों पुराने दानी, के नाम मेंटते हैं –२।।
• दे करके दान अपने,[२] नामों से भर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६४।।

जिनवाणी पढ़ते पढ़ते, निंदिया भी ले रहे हैं –२।
उसको जगाया हमने, कहे हम ना सो रहे हैं –२।।
• सच्चाई जो कहे तो,[२] झूठा बना रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६५।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

जिनवाणी चौकी पे रख, पूजन भी कर रहे हैं –२।
अलमारी में उसे हम, वापस ना धर रहे हैं –२।।
• जिनवाणी का अविनय,[२] करते ही जा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।६६।।**

विद्वानों के सम्मेलन, बढ़ चढ़ के हो रहे हैं –२।
आगम की वाणी को ये, दिन रात धो रहे हैं–२।।
• अपनी परम्परा को,[२] आगम बना रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६७।।

गुरुवर की पिच्छी सिर पे, लगने से डर रहे हैं –२।
होटल बाजारों में ये, एकसाथ चल रहे हैं –२।।
• मैला है मन हमारा,[२] हमें दोष दिख रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६८।।

चौके का दूध हम तो, ग्वाले से ले रहे हैं –२।
पानी मिलाके उसमें, ग्वालेजी दे रहे हैं –२।।
• गुरु को अशुद्ध देकर,[२] हम शुद्धि दे रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।६६।।

सोले के कपड़ें डिब्बे, थैली में आ रहे हैं –२ ।
डण्डे से उठा करके, चौके में ला रहे हैं –२ ।।
• चौके की शुद्धि हम तो,[२] सुधार ना रहे है •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।१००।।**

➤➤➤ दसवाँ भाग समाप्त ➤➤➤

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

पापों के काम हम तो, सजधज के कर रहे हैं –२।
धरम के काम देख, बच बच के कर रहे हैं –२।।
• नरकों में जाने का हम,[२] टेन्डर भर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०१।। ११

पापों के कामो में हम, पैसा बहा रहे हैं –२।
धरम के काम पैसा, ना पास में कहे हैं –२।।
• जैसा कमाया पैसा,[२] वैसा बहा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०२।।

दस धर्म के दिनों में, धर्मात्मा कहाये –२।
व्रत हो गये जो पूरे, होटल में जा के खाये –२।।
• धरम को भूलकर हम,[२] भूल करते जा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०३।।

उपवास व्रत करके, तन को सूखा रहे हैं –२।
व्रतों के पारणे में, गाजर भी खा रहे हैं –२।।
• आलू बिना हमारे,[२] ये प्राण जा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।१०४।।**

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

मंदिर हुए पुराने, उनको तुड़ा रहे हैं –२।
प्राचीनता मंदिर की, हम तो उड़ा रहे हैं –२।।
• मंदिर के ही कामों में,[२] पंड़ित कमा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०५।।

समय ना मिले दिन में, रातों में आ रहे हैं –२।
गुरुभक्ति के भजन हम, रातों में गा रहे हैं –२।।
• रातों में मुनिवर के,[२] उपदेश छा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०६।।

जब से आये है चैनल, मंदिर भी छूट रहे हैं –२।
टी.वी. को देख सोये, देरी से उठ रहे हैं –२।।
• न्हवन टी.वी. में देखा,[२] दर्शन भी छूट रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०७।।

साधु के पास श्रावक, जाने से डर रहे हैं –२।
हम से ना त्याग होगा, बातें ये कर रहे हैं –२।।
• मरने के बाद सबकुछ,[२] ये त्याग कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०८।।

घर पे छाया मंदिर की, हमें दोष दिख रहे हैं –२।
अज्ञानता के कारण, घर अपने बिक रहे हैं –२।।
• प्रभुवर की छत्रछाया,[२] में पाप दिख रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०६।।

चौमासा करने मुनिवर, स्वयं ही जा रहे हैं –२।
श्रावक तो नामी गुरुवर, को ही ला रहे हैं –२।।
• करुणाधारी मुनि के,[२] निकट ना आ रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।११०।।**

❄❄❄ **ग्यारहवाँ भाग समाप्त** ❄❄❄

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

चौदस अष्टमी को, हरी त्याग कर रहे हैं –२।
वस्तु हरी सुखाके, डिब्बों में भर रहे हैं –२।।
• महिनों से हम कषायों,[२] का बन्ध कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।

भाग १२ मेरे आपकी कृपा ..... ।।१०६।।

भावों से भक्ति करके, पैसा बचा रहे हैं –२।
हो द्रव्य में खर्चा, माया रचा रहे हैं –२।।
• ये द्रव्य क्रिया जड़ है,[२] सबको जचा रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।११२।।**

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

अध्यात्म के प्रवचन, हमको नहीं सुहाते –२।
मन की ना मिले बातें, हम बीच में उठ जाते –२।।
• श्रोता बचे कुचे भी,[२] निंदिया के झोके खाते •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।११३।।**

विहार हो गुरु का, संग हम ना चल रहे हैं –२।
समय ना पास मेरे, ऐसा ही हम कहे हैं –२।।
• श्रावक के काम भी अब,[२] नौकर से चल रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।११४।।**

अशुद्धि वाली बहनें, संग संग में चल रही हैं –२।
अशुद्धि की बिमारी, घर घर में पल रही है –२।।
• बहनों के पाप देखो,[२] हरपल ये बढ़ रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१९५।।

रथ में प्रभु विराजे, हम साथ चल रहे हैं –२।
सम्मान में बरफ के, गोले भी गल रहे हैं –२।।
• पैरों में देखों सबके, जूते भी डल रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।११६।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

सम्मान के बिना हम, समय ना दे रहे हैं –२ ।
माला मिले जहां पे, समय को दे रहे हैं –२ ।।
• मौका मिला तो थोड़ा,[२] पैसा भी ले रहे है •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... **।।११७।।**

पद्मावती माता का, अपमान कर रहे हैं –२ ।
हम अन्य देवी देवों, का मान कर रहे हैं –२।।
• मुसीबतों में हम तो,[२] हर काम कर रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा ..... ।।१९८।।

रातों में घण्टे बजते, हमें दोष दिख रहे हैं –२ ।
ढोलक नगाड़े, झांझर, मंदिर में बज रहे हैं –२ ।।
• निति नियम में अपने,[२] स्वयं ही फंस रहे हैं •
नादानी करके हम तो – तेरा नाम ले रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं ।।
मेरे आपकी कृपा .... ।।११६।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

शिखरजी के पहाड़ों, दर्शन को जा रहे हैं –२।
चढ़ते हुए मसाला, जर्दा भी खा रहे हैं –२।।
• मिल जाये आलू बण्ड़ा,[२] ये भाव भा रहे हैं •
चालीसा श्रावकों का, सुगन्ध गा रहे हैं ।
कहते गुरु कृपा से, सब काम हो रहे हैं **।।१२०।।**

बारहवाँ भाग समाप्त

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

* जिनवाणी स्तुति–१ *

रचना – बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी (वर्तमान में आचार्य श्रेयसागरजी महाराज)

प्राणों से प्यारी ये – जिनवाणी माता –२
सबकी दुलारी ये – जिनवाणी माता –२

(अन्तरा)

सुर नर मुनि तेरी महिमा, गाते भक्ति से ।
पार नहीं पाया तेरा, निज शक्ति से ।।
हाथ जोड़ कर शिश नमाऊं, हे जिनवाणी माता हो ।
प्राणों से प्यारी.....।।१।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

जो जो भी तेरा, नित ध्यान लगाते हैं ।
अष्ट कर्म को काट, मोक्षफल पाते हैं ।।
मोक्ष महाफल मुझको दे दो, हे जिनवाणी माता हो ।
प्राणों से प्यारी.....।।२।।

अंधियारा जग में है, दीप जलाओ तुम ।
दे दो ज्ञानदीप मुझको, मैं पाऊं तुम ।।
मेरी अरजी सुन लेना, हे जिनवाणी माता हो ।
प्राणों से प्यारी.....।।३।।

चार गति में हे माता, मैं भटका हूँ ।
कर्म शत्रु के कारण ही, मैं अटका हूँ ।।
कर्म शत्रु को दूर भगा दो, हे जिनवाणी माता हो ।
प्राणों से प्यारी.....।।४।।
संसार जाल में फंसकर ही, मैं मोहया हूँ ।
प्यार नहीं पाया तेरा, मैं रोया हूँ ।।
प्यार तेरा मिल जाये मुझको, हे जिनवाणी माता हो ।
प्राणों से प्यारी.....।।५।।

***** (इति जिनवाणी स्तुति) *****

* जिनवाणी स्तुति–२ *

रचना – बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी (वर्तमान में आचार्य श्रेयसागरजी महाराज)

प्राणों से प्यारी ये – जिनवाणी माता –२
सबकी दुलारी ये – जिनवाणी माता –२

(अन्तरा)

देह बुद्धि के कारण, जग में भटका हूँ ।
भेद ज्ञान के ही बिना, मैं अटका हूँ ।।
ज्ञान करा दो, निज आतम का – हे जिनवाणी माता हो

प्राणों से प्यारी.....

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

तुझे पुकारे भारती, हे बहुभाषिणी ।
तुझे दुलारे शारद, पुस्तक धारिणी ।।
हे वागिश्वरी ब्रह्माणी माता – नाम अनेकों पाये हैं
प्राणों से प्यारी.....

मोह नींद में हम सोये हैं, जगाओ तुम ।
अष्ट कर्म में हम खोये हैं, भगाओ तुम ।।
ग्यारह अंग चौदह पूरब की – हे माता तू पाठी है
प्राणों से प्यारी.....

दर दर ठोकर खाई, झोली खाली है ।
पता नहीं माँ मुझको, ये जग जाली है ।।
तेरा पता मुझको मिल जाये – हे जिनवाणी माता

प्राणों से प्यारी.....

प्रभु के मुख से प्रकटी, हो जिन माता रे ।
गणधर ने तुझको, आगे विस्तारा रे ।।
युगल करों से नमन तुझे है – हे जिनवाणी माता हो

*** (इति जिनवाणी स्तुति) ***

* आरती भगवान चंद्रप्रभु की *

ऊँ जय चंद्रप्रभु देवा... स्वामी जय चंद्रप्रभु देवा
तुम हो विघ्नविनाशक स्वामी, पार करो देवा ।।१।।
ऊँ जय चंद्रप्रभु .....

(अन्तरा)

मात सुलक्षणा पिता तुम्हारे महासेन देवा । स्वामी.....
चंद्रपुरी में जन्म लियो, स्वामी देवो के देवा ।।२।।
ऊँ जय चंद्रप्रभु .....
जन्मोत्सव पर प्रभु तुम्हारे, सुरनर हर्षाये । स्वामी.....
रूप तिहारा महामनोहर, सबके मन भाये ।।३।।
ऊँ जय चंद्रप्रभु .....

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

बाल्यकाल में ही प्रभु तुमने दीक्षा ली प्यारी ।स्वामी.....
भेष दिगम्बर धारा, महिमा है न्यारी ।।४।।
ऊँ जय चंद्रप्रभु .....
फाल्गुन वदी सप्तमी को प्रभु, केवलज्ञान हुआ । स्वामी.....
जियो और जिने दो सबको, ये संदेश दिया ।।५।।
ऊँ जय चंद्रप्रभु .....
अलवर प्रांत में नगर तिजारा, देहरे में प्रगटे । स्वामी.....
मूरत तिहारी अपने नैनन, निरख निरख हर्षे ।।६।।
ऊँ जय चंद्रप्रभु .....
हम प्रभु दास तिहारे, निशदिन गुण गावे । स्वामी.....
पाप तिमिर को दूर करो प्रभु, सुख शांति लावे ।।७।।
ऊँ जय चंद्रप्रभु .....

* आरती माँ जिनवाण की *

जिनवाणी माता, मैं तो लेकर आया आरती ।
सरस्वती माता, मैं तो लेकर आया आरती ।।

(अन्तरा)

प्रथम आरती दीपक ले, प्रथमानुयोग की करता ।
महापुरुषों की कथा से, मन को दृढ़ मैं करता **।।१।।**
आरती करके द्वार तेरे माँ– मैं तो पुण्य कमाया
जिनवाणी माता.....

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

दूजी आरती दीपक ले, करणानुयोग की करता ।
तीन लोक झलके जगमग ये, ज्ञान जीवन में धरता ।।२।।
आरती करके द्वार तेरे माँ– मैं तो पुण्य कमाया
जिनवाणी माता.....

तीजी आरती दीपक ले, चरणानुयोग की करता ।
मुनि और श्रावक धर्म का, चिन्तन मैं तो करता ।।३।।
आरती करके द्वार तेरे माँ– मैं तो पुण्य कमाया
जिनवाणी माता.....

चौथी आरती दीपक ले, द्रव्यानुयोग की करता ।
षडद्रव्यों का ध्यान लगाके, उसका चिन्तन करता ।।४।।
आरती करके द्वार तेरे माँ– मैं तो पुण्य कमाया
जिनवाणी माता.....

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

* आरती *

प.पू. १०८ आचार्य श्री वासुपूज्यसागर महाराजजी

झूम झूम नाचो झूम झूम[२]
प्यारा लागे छे गुरुराज आज थारी आरती उतारु[२]
वासुपूज्य गुरुराज आज थारी.....
आरती उतारु थारी मुरत निहारु[२] छोड़ा है घर परिवार
आज थारी.....प्यारा लागे.....झूम झूम नाचो.....

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

अन्तरा

लाख लाख दीवड़ा नी आरती उतारु[२]
लाख लाख तोरण बंधाओ । **आज थारी.....प्यारा लागे.....१**
मंदिर मां घनन घनन घंटा बाजे छे[२]
झनन झनन जालर बाजे । **आज थारी.....प्यारा लागे.....२**
बुंदेलखंड़ मां जन्म लियो छे[२]
धन्य छे महेवा ग्राम । **आज थारी.....प्यारा लागे.....३**
माता रामा पिता कालीचरणजी[२]
उनके हो प्यारे तुम लाल । **आज थारी.....प्यारा लागे.....४**

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

लाख चौरासी मंत्रों के रचयिता[२]
वासुपूज्य गुरुराज । **आज थारी..... प्यारा लागे.....५**
नगर नगर मां गुरुवर पधार्या[२]
थाय छे जय जयकार । **आज थारी.....प्यारा लागे.....६**
नगर में कोयल मंदिर में श्रावक[२]
बोले छे जय जयकार । **आज थारी.....प्यारा लागे.....७**
आरती उतारु थारी मूरत निहारु[२]
छोड़ा है घर परिवार, **आज थारी.... आरती उतारु....८**

रचना – बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी (वर्तमान में आ. श्री श्रेयसागरजी म.)

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

* आरती – १ *

प.पू. १०८ आचार्य श्री श्रेयसागर महाराजजी

एके मोक्ष दरवाजे तंबु ताणिया रे लोल[२]
तंबु ताणिया रे लोल....तंबु ताणिया रे लोल

श्रेयसागर गुरुवर, नगरी आव्या रे लोल
..... नगरी तो धन्य धन्य, थइ गई रे लोल

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

अन्तरा

हीरालालजी रा लाड़ला, तमे केसर बाई रा जाया[२] ।
पाड़वा नगरी में जन्म्या, तमे सब जन मन हर्षाया[२] ।।
मातापिता ने धन्य... तमे कर दिया रे लोल । **एके मोक्ष.....१**
भाई बहन ने छोडया, तमे संयम पथ अनुरागी ।
वासुपूज्य शरणे आव्या, तमे ब्रह्मचर्य अपनाया ।।
संयम पथ ना धारी... तमे थई गया रे लोल । **एके मोक्ष.....२**
पंच महाव्रत पाल्या, तमे दश लक्षण ने धारया ।
कठिन कठिन तप करया, तमे घोर परिषह सहता ।।
आचार्य पद ना धारी... तमे थई गया रे लोल । **एके मोक्ष....३**

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

किस विध महिमा गाऊं थारी, शब्द कहाँ से लाऊं ।
चरणों में शरणों दीजो, भवसागर से तर जाऊं ।।
अरजी चित्त में धरजो... सबने पार उतारो जी । **एके मोक्ष....४**

करी आपने रचना, चौका पुराण की प्यारी ।
ज्ञान शुद्धि का पाते, जो पढ़ते हैं नर नारी ।।
चौका पुराण की महिमा... सारे जग में न्यारी । **एके मोक्ष....५**

रचना

संघस्थ बा. ब्र. हीना दीदी

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

* आरती – २ *

प.पू. १०८ आचार्य श्री श्रेयसागर महाराजजी

श्रेयसागर की गुण आगर की, ले मंगल दीप जलाय हो ।
हम आज उतारे आरतियां[२] ।।
पिता आपके हीरालालजी, माता केशरबाई[२] ।
ग्राम पाड़वा जनम लियो है, सब जन मंगल गाई[२] ।।
ना रागी की, ना द्वेषी की – ले दीप सुमन का थाल हो ।
हम आज उतारे आरतियां ।। **श्रेयसागर की गुण.....।।१।।**

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

घोर उपवास व्रतों के धारी, आतम ब्रह्म विहारी[२] ।
खड्गधार पथ पर चल करके, शिथिलाचार निवारी[२] ।।
गृहत्यागी की, वैरागी की – ले आतम ज्योत जलाय हो ।
हम आज उतारे आरतियां ।। **श्रेयसागर की गुण..... ।।२।।**
गुरुवर आज नयन से लखकर, आलौकिक सुख पाया[२] ।
भक्तिभाव से आरती करके, फूला नहीं समाया[२] ।।
ऐसे ऋषिवर की, ऐसे मुनिवर की– करें आरती बारम्बार हो ।
हम आज उतारे आरतियां ।। **श्रेयसागर की गुण... ।।३।।**

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

गुरुवर आपने ज्ञान कराया, शुद्धि का पाठ पढाया[२] ।
लिखा ग्रंथ चौका पुराण, सब वर्णन उसमें आया[२] ।।
ऐसे ग्रंथों की, ऐसे संतों की – करें आरती बारंबार हो ।
हम आज उतारे आरतियां ।। **श्रेयसागर की गुण...।।४।।**
गरीब अमीर का भेद किये बिन, आशीष सबको देते[२] ।
रात्रि होटल कंद जो त्यागे, आहार उसीसे लेते[२] ।
ऐसे गुरुवर से हम त्याग करें – करे आतम का कल्याण हो ।
हम आज उतारे आरतिया ।। **श्रेयसागर की गुण...।।५।।**

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

* आरती – ३ *

प.पू. १०८ आचार्य श्री श्रेयसागर महाराजजी

गुरुवर को मंदिर लाओ, आरती की थाल सजाओ ।
श्रेय गुरु की करते आरती,
हो हम तो श्रेय गुरु की करते आरती

अन्तरा

केशर देवी जननी के लल्ला, हीरालाल के प्यारे –२ ।
नगर पाड़वा जनम लिया गुरु वासुपूज्य के तारे –२।।
जांजर मंजीरा लाये, सब मिलकर वाद्य बजाये
श्रेय गुरु की करते.....हो हम तो.....

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

सावन शुक्ला षष्टि प्यारी, गुरु से दीक्षा धारी –२ ।
गुरुभक्ति का फल मिला, आचार्य पद अवतारी –२।।
गुरुभक्ति की महिमा भारी, कर लो सारे नर नारी ।
श्रेय गुरु की करते.....हो हम तो.....
गुरुवर तुमने ज्ञान दिया, शुद्धि का पाठ पढ़ाया –२।
ग्रंथ लिखा चौका पुराण, जन जन के दिल में समाया –२।।
ऐसे ग्रंथों की महिमा पढ़कर जन जन को बताये ।
श्रेय गुरु की करते.....हो हम तो.....

रचना – संघस्थ आर्यिका श्रेष्ठमति माताजी

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

* गुरु वन्दना *

आचार्यवर्य महावीरकीर्ति, भाषासुऽनेकाशु विशारदं च ।
नाना सुविद्या सुसिद्धान्तशास्त्रे, महाप्रवीणं प्रणमामि नित्यं ।।१।।

संघाधिपो विमलसिन्धु – मुनेर्विनयः ।
चर्या शरेण कुशलो – भव छेदने यः ।।
नाना समुन्नत गुणः यति श्रेष्ठ सुरिः ।
तं पार्श्वसागर महं प्रणमामि नित्यम् ।।२।।

बा. ब्र. सुगन्ध भैय्याजी की अवस्था में की गई

श्री वासुपूज्य सम बालयतिर्मुनिशः ।
नित्यात्म चिन्तनरतः सरलः सुशान्तः ।।
नाना सुशास्त्र कुशलः श्रुतलेखको यः ।
नित्यं नमामि तं–मह गुरु वासुपूज्यम् ।।३।।

स्याद्वाद तर्क कुशलं भगवन् भवन्तम् ।
दृष्टवा स्मरामि गुरुदेव समन्तभद्रम् ।।
वात्सल्य मूर्ति–मुनि–विष्णुकुमार तुल्यम् ।
नित्यं नमामि तं–महं गुरु वासुपूज्यम् ।।४।।

सर्वस्पृहा शिवरमाय विहाय यैश्च ।
न्यायेन ज्ञानचरितं खलु वर्धमानं ।।
तेषां सुकीर्ति–सुगुणः सुख शान्तिदः न ।
नित्यं नमामि तं–महं गुरु वासुपूज्यम् ।।५।।

श्री मज्जिनेंद्र कथितः शिवमार्ग धारी ।
श्री वासुपूज्य गुरुवर्य विनेय श्रेष्ठः ।।
श्रेयार्थमागम पथे चलति प्रभूहि ।
तं श्रेयसागर मुनीन्द्र महं नमामि ।।६।।

ज्ञानी गुणी श्री वासुपूज्य से ज्ञान धारे ।
चारित्र से सहज में ही ये दोष टारे ।।
जो पालते परम पंच महाव्रतों को ।
तं श्रेयसागर मुनींद्र महं नमामि ।।७।।

जो श्रेय है शरण मंगल कर्म जेता ।
आराध्य है परम है शिव पंथनेता ।।
आदर्श है सभी जगत भवि प्राणियों के ।
तं श्रेयसागर मुनींद्र महं नमामि ।।८।।

* प्रायश्चित्त *

आहार विहार निहार शयन में मैंने बहुत प्रमाद किये ।
निज चर्या में दोष लगाये, बहु जीवों को कष्ट दिये ।
हे गुरुदेव ! दया के सागर, करुणा कर उद्धार करो ।
प्रायश्चित्त देकर मुझको गुरुवर, भवसागर से पार करो ।।

* दिन का चौघड़िया *

समय	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
६ से ७:३० तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
७:३० से ९ तक	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
९ से १०:३० तक	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
१०:३० से १२ तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
१२ से १:३० तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
१:३० से ३ तक	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
३ से ४:३० तक	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
४:३० से ६ तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

* रात्रि का चौघड़िया *

समय	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
६ से ७:३० तक	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
७:३० से ९ तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
९ से १०:३० तक	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
१०:३० से १२ तक	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
१२ से १:३० तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
१:३० से ३ तक	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
३ से ४:३० तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
४:३० से ६ तक	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

गुरु समाधि

१७.८.२०१८ तिथी श्रावण शुक्ला सप्तमी
श्रवणबेलगोला बाहुबली (कर्नाटक)

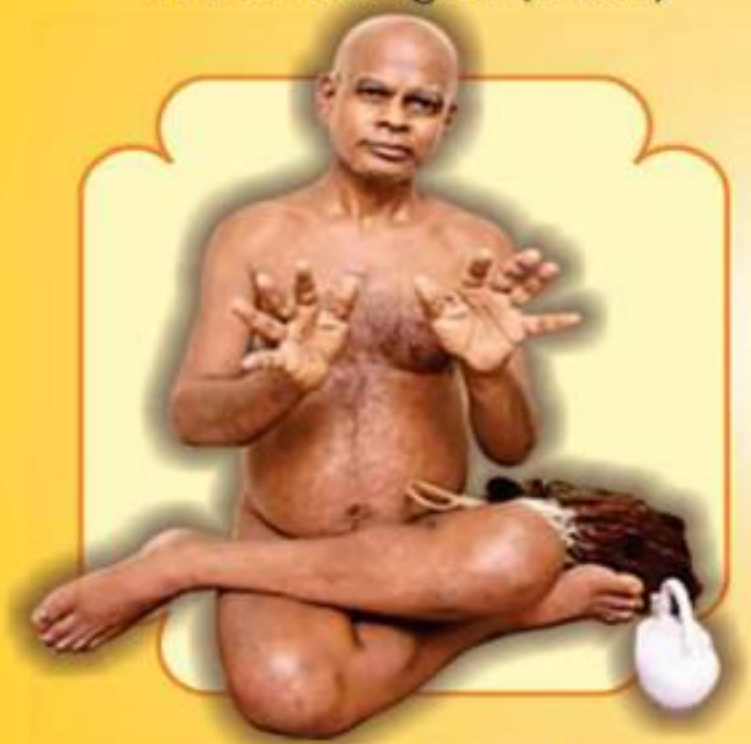

प.पू. १०८ आचार्य
श्री वासुपूज्यसागर महाराजजी

शिष्य दीक्षा

गुरूवार, १६.८.२०१८ श्रावन शुक्ला षष्टि
श्रवणबेलगोला बाहुबली (कर्नाटक)

आचार्य
श्री श्रेयसागरजी महाराज

पुण्यार्जक
श्रावक
चालीसा
समस्त
सचित्र
चौका
पुराण
ग्रंथ
परिवार सदस्य
पढ़े
सुने
सचित्र
चौका
पुराण
ग्रंथ
सचित्र
चौका
पुराण
ग्रंथ
द्वितीय